महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी विश्वविद्यालय में 'वंदे मातरम् के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवबोध' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

वंदे मातरम् मातृभूमि के समर्पण का गीत है : प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे

वर्धा, 25 फरवरी 2026 : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे ने कहा कि संपूर्ण वंदे मातरम् हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कार का गीत है। यह हजारों लोगों के बलिदान का गीत है। वंदे मातरम् गीत अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पण का गीत है। प्रो. मराठे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संयुक्त तत्त्वावधान में फिल्म अध्ययन विभाग क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज द्वारा वंदे मातरम् के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवबोध विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की। इस अवसर पर भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के निदेशक प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद जोशी एवं विश्वविद्यालय के कुलसचिव क़ादर नवाज़ खान मंचासीन थे। 25-26 फरवरी इन दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन कस्तूरबा सभागार में बुधवार, 25 फरवरी को किया गया।

प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे ने भारत के लोगों को सहोदर बताते हुए आगे कहा कि वंदे मातरम् ने देशभक्तों में मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव जगाया और यह एक प्रेरक उद्घोष बन गया। उन्होंने कहा कि हमारी पीढ़ियाँ वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत के रूप में गाती आई हैं। इसके प्रथम छंद में मातृभूमि का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। वंदे मातरम् का पहला अवबोध सांस्कृतिक राष्ट्रदर्शन, दूसरा अवबोध सभी में एकत्व और तीसरा अवबोध स्वदेशी तथा बंधुता का है। उन्होंने कहा कि भारत को स्वयंपूर्ण और आत्मनिर्भर बनाना है तो हमें वंदे मातरम् की भावना को

आत्मसात करना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि वंदे मातरम् गीत पहली बार रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा वर्ष 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया था।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के निदेशक प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी ने राष्ट्रगान से राष्ट्रगीत तक की यात्रा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अपने अध्ययन काल में उन्हें पाठ्यक्रम के माध्यम से वंदे मातरम् की विशेष जानकारी नहीं मिल सकी थी। उन्होने 1875 से 1895 के कालखंड का उल्लेख करते हुए कहा कि इस बीच आधारभूत ढांचे को तैयार करने में बड़ी भूमिका रही। भारत के इतिहास को भू-सांस्कृतिक आधार पर देखने से सही इतिहास का बोध होगा। उन्होंने आदि शंकराचार्य से शुरू हुई वंदे मातरम् की यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की आधारभूत पृष्ठभूमि की यात्रा रही। उन्होंने इस आयोजन को शिमला से बाहर पहली बार हिंदी विश्वविद्यालय में आयोजित करने के लिए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा के प्रति साधुवाद व्यक्त किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि वंदे मातरम् का सृजन राष्ट्रीय चेतना के प्रेरणात्मक दौर में 1875 के आसपास हुआ। उन्होंने कहा कि 1905 से 1937 तक आते-आते यह संघर्षमयी, बलिदानमयी राष्ट्र चेतना का आवाज बन गया। दासता से उद्वेलित राष्ट्रीय सोच से वंदे मातरम् का उदय हुआ। इस गीत में भारत का नहीं अपितु पूरी पृथ्वी माता का वर्णन है। इसे रवींद्रनाथ टैगोर ने धरती माता का वंदन का गीत कहा है। उन्होंने कहा कि बंकिम चंद्र चटर्जी ने वंदे मातरम् की रचना इस भावना के साथ की कि हम अंग्रेजी शासन के गीत नहीं, बल्कि अपनी मातृभूमि का गीत गाएँगे। बालमुकुंद गुप्त का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने वंदे मातरम् को राखी का धागा कहा था। उन्होंने कहा कि वंदे मातरम् भारत के स्व-जागरण का मंत्र है और इसमें भारत के भास्कर स्वरूप का दर्शन होता है। संगोष्ठी का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन एवं डॉ. तेजस्वी एच.आर एवं समुह द्वारा कुलगीत गायन से किया गया तथा राष्ट्र गीत वंदे मातरम् के गायन से संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र समापन किया गया।

'वंदे मातरम् की सांगीतिक यात्रा' विषय पर एक विशेष प्रदर्शनी

कार्यक्रम के अंतर्गत 25 फरवरी को अटल बिहारी वाजपेयी भवन में 'वंदे मातरम् की सांगीतिक यात्रा' विषय पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें वंदे मातरम् के ऐतिहासिक, सांगीतिक तथा सांस्कृतिक विकास को प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रो. मिलिंद मराठे, प्रो.

हिमांशु चतुर्वेदी एवं कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने फीता काटकर एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया। प्रदर्शनी का संयोजन प्रदर्शनकारी कला विभाग अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश भारती ने किया। यह प्रदर्शनी 26 फरवरी तक सभी के लिए खुली रहेगी। प्रदर्शनी देखने के लिए वर्धा के स्कूलों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को आवाह्न किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज के फिल्म अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. यशार्थ मंजुल ने किया तथा कुलसचिव क़ादर नवाज़ ख़ान ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर महाराज गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित, वरिष्ठ संपादक अनंत विजय, संपादक प्रफुल्ल केतकर, आईसीएएस एवं इतिहासकार अखिलेश झा, आईआरएस एवं इतिहासकार रश्मिता झा, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र जेएनयू, नई दिल्ली के डॉ. क्रिस्थु डॉस, संपादक राकेश मंजुल, दिल्ली विश्वविद्यालय, विधि संकाय की प्रो. सीमा सिंह आदि सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

मराठी :

हिंदी विश्वविद्यालयात वंदे मातरमचे सामाजिक आणि सांस्कृतिक आकलन या विषयावर राष्ट्रीय चर्चासत्र व प्रदर्शनाचे उद्घाटन

वंदे मातरम हे मातृभूमीला समर्पित गीत आहे: प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे

वर्धा, २५ फेब्रुवारी २०२६ : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नवी दिल्लीचे अध्यक्ष प्रो. मिलिंद सुधाकर मराठे म्हणाले की वंदे मातरम् हे आपल्या सभ्यता, संस्कृती आणि संस्कारांचे गीत आहे. हे हजारो लोकांच्या बलिदानाचे गीत असून मातृभूमीप्रती समर्पणाची भावना व्यक्त करणारे आहे. प्रो. मराठे हे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा आणि भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान यांच्या संयुक्त विद्यमाने, प्रादेशिक केंद्र प्रयागराज येथील चित्रपट अध्ययन विभागातर्फे आयोजित 'वंदे मातरम्चे सामाजिक व सांस्कृतिक आकलन' या दोन दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवादाच्या उद्घाटन सत्रात प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी विश्वविद्यालयाच्या कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा होत्या. यावेळी भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला येथील संचालक प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्राचे सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद जोशी तसेच विश्वविद्यालयाचे कुलसचिव कादर नवाज खान मंचावर उपस्थित होते. २५-२६ फेब्रुवारी दरम्यान आयोजित या परिसंवादाचे उद्घाटन कस्तुरबा सभागृहात बुधवार २५ फेब्रुवारी ला करण्यात आले.

प्रो. मराठे यांनी भारतातील सर्व नागरिकांना सहोदर संबोधत सांगितले की वंदे मातरमने देशभक्तांमध्ये मातृभूमीप्रती समर्पणाची भावना जागवली आणि तो एक प्रेरणादायी घोष बनला. अनेक पिढ्या हे गीत राष्ट्रगीत म्हणून गात आल्या आहेत. पहिल्या कडव्यात मातृभूमीचे अत्यंत सुंदर वर्णन आहे. वंदे मातरमचे पहिले आकलन सांस्कृतिक राष्ट्रदर्शन, दुसरे सर्वांतील एकत्व आणि तिसरे स्वदेशी व बंधुता असे आहे. भारत

स्वयंपूर्ण व आत्मनिर्भर बनवायचा असेल तर वंदे मातरमची भावना आत्मसात करावी लागेल, असे त्यांनी नमूद केले. वंदे मातरम् हे गीत प्रथम रवींद्रनाथ ठाकुर यांनी १८९६ साली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस च्या कलकत्ता अधिवेशनात गायले होते असेही ते म्हणाले.

प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी राष्ट्रगान ते राष्ट्रगीत या प्रवासावर भाष्य करताना म्हणाले की त्यांच्या शिक्षणकाळात अभ्यासक्रमात वंदे मातरम् विषयी विशेष माहिती मिळाली नव्हती. १८७५ ते १८९५ या कालखंडात मूलभूत पायाभूत रचना उभारण्यात मोठी भूमिका होती. भारताचा इतिहास भू-सांस्कृतिक आधारावर पाहिल्यास योग्य आकलन होईल. त्यांनी आदि शंकराचार्यांपासून सुरू झालेल्या या प्रवासाचा उल्लेख करत तो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनाच्या पृष्ठभूमीचा भाग असल्याचे सांगितले. हा कार्यक्रम प्रथमच शिमल्याबाहेर हिंदी विश्वविद्यालयात आयोजित केल्याबद्दल त्यांनी कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा यांचे अभिनंदन केले.

अध्यक्षीय भाषणात प्रो. कुमुद शर्मा म्हणाल्या की वंदे मातरमची निर्मिती १८७५ च्या सुमारास राष्ट्रीय चेतनेच्या प्रेरणादायी काळात झाली. १९०५ ते १९३७ या काळात ते संघर्षमय आणि बलिदानमय राष्ट्रीय चेतनेचा आवाज बनले. दास्यत्वाविरुद्ध उद्वेलित झालेल्या राष्ट्रीय भावनेतून या गीताचा उदय झाला. बंकिमचंद्र चटर्जी यांनी हे गीत इंग्रजी सत्तेचे नव्हे तर मातृभूमीचे गीत गाण्याच्या भावनेतून रचले. त्यांनी बालमुकुंद गुप्त यांच्या उल्लेखासह वंदे मातरमला स्व-जागरणाचा मंत्र संबोधले.

परिसंवादाचे उद्घाटन दीपप्रज्वलन व डॉ. तेजस्वी एच.आर. आणि समूहाच्या कुलगीत गायनाने झाले. सत्राचा समारोप राष्ट्रगीत *वंदे मातरम्*च्या सामूहिक गायनाने झाला.

'वंदे मातरम्ची सांगीतिक यात्रा' विशेष प्रदर्शनी

कार्यक्रमांतर्गत २५ फेब्रुवारी रोजी अटल बिहारी वाजपेयी भवन येथे 'वंदे मातरम्ची सांगीतिक यात्रा' या विषयावर विशेष प्रदर्शनी आयोजित करण्यात आली. या प्रदर्शनीत वंदे मातरमच्या ऐतिहासिक, सांगीतिक आणि सांस्कृतिक विकासाचे दर्शन घडविण्यात आले. प्रदर्शनीचे उद्घाटन प्रो. मिलिंद मराठे, प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी व प्रो. कुमुद शर्मा यांच्या हस्ते फीत कापून व दीपप्रज्ज्वलन करून झाले. प्रदर्शनकला विभागाचे अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश भारती यांनी संयोजन केले. ही प्रदर्शनी २६ फेब्रुवारीपर्यंत सर्वांसाठी खुली राहणार असून वर्ध्यातील शाळा व महाविद्यालयांतील विद्यार्थ्यांना भेट देण्याचे आवाहन करण्यात आले आहे.

उद्घाटन सत्राचे संचालन प्रादेशिक केंद्र प्रयागराज येथील चित्रपट अध्ययन विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. यशार्थ मंजुल यांनी केले, तर कुलसचिव कादर नवाज खान यांनी आभार मानले.

यावेळी महाराज गंगा सिंह विश्वविद्यालयचे कुलगुरू प्रो. मनोज दीक्षित, वरिष्ठ संपादक अनंत विजय, संपादक प्रफुल्ल केतकर, इतिहासकार अखिलेश झा, इतिहासकार रश्मिता झा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय येथील ऐतिहासिक अध्ययन केंद्राचे डॉ. क्रिस्टुआ डॉस, संपादक राकेश मंजुल तसेच दिल्ली विश्वविद्यालय विधी संकायाच्या प्रो. सीमा सिंह यांच्यासह विश्वविद्यालयाचे अधिष्ठाता, विभागप्रमुख, प्राध्यापक आणि मोठ्या संख्येने विद्यार्थी उपस्थित होते.

नमस्कार !

मा. संपादक/संवाददाता महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करने का कष्ट करें।

सादर धन्यवाद।